

सं० ओ० वि०/एफ डी/69-87/8194.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० पेरीसन्ज साईकल प्रा० लि०, 1/45, डी. एल.एफ. एरिया, फरीदाबाद के अधिक श्री रामजन्म प्रसाद-भार्फत फरीदाबाद कामगर यूनियन (रजि.), 2/7, गोरी कालोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है ; और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को व्यायानियं हेतु निर्दिष्ट करना बाधनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, आंदोलक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयाग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त आधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त दा उससे सुरक्षित था। उसके सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानंय एवं पचाट तान मोस मे देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अधिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुरक्षित मामला है:—

क्या श्रो रामजन्म प्रसाद को सेवा और का समाप्त न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कदार है ?

सं० ओ० वि०/एफडी०/69-87/8201.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मं० पेरीसन्ज साइकल प्रा० लि०, 1/45, डा० एल. एरि०, फरोदाबाद के अमित श्रावण रामेश्वर प्रताद मार्केट फरोदाबाद कामगर यूनियन (रजि०), 2/7, गाया कालीना, पुराना फरोदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है :

और वकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांडनोय समझते हैं;

इसलिये, अब, आद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 को धारा 10 का उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-(3)-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जा-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम का धारा 7 के अधीन गठित श्रम व्यायालय, करादाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोंचे लिंग मामला व्यावरिष्य एवं पंचाट तात मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक को शक्ति या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

वया श्री रामेश्वर प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

स० आ० विं०/एक०टी०/69-87/8208.—चृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि म० परीसन्ज साइकल प्रा० लि०, 1/45, च० एल० एक० एरिया, फरीदबाद के श्रमिक थोड़ाकुर प्रसाद माफेत फरीदबाद कामगर यूनियन (रजि.), 2/7, गोपी कालोनी, पराना फरीदबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

और चक्रिहरियाणा के राज्यपाल विवाद का व्याप्तिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाधनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हाईकोर्ट के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम को धारा 7 के प्रभाव पाठें श्रम न्यायालय, फरोड़ावाद का विवादप्रस्त या उपर्युक्त या उपर्युक्त अधिनियम नामे लिखा मामला भाषानांग एवं पबाट तोन माप स देने हुन् तिर्दिल करत है जाकि उक्त प्रबन्धकों तथा अधिक के बोल या तो विवादप्रस्त बामत है या विवाद से सुसंगत भ्रयवा संबंधित भामला है :—

क्या श्रोठान्त्र प्रसाद को संवादी का समापन न्यायादित तरा ठांक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं०. आ०.वि./एफ०ड०/६९-८७/८२।६.—वू कि हरियाणा के राज्याल को राय है कि मै० पेरोसन्ज. साईकल प्रा० लि०, १/४५, ही० एल० एफ० एरिया, फरीदाबाद के श्रामक श्रा जय राम मार्फत फरीदाबाद कामगर यूनियन (जिं०) २/७, गोपा कालानी पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्वकों के बोच इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई अधिकारिक विवाद है;

और चंकि हरयाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायान्तर्ष बताते हुए (निर्दिष्ट करना वाधनीय समझते हैं) ;

इतिहास, अब, आधारित विवाद अधिनियम, 1947 का धारा 10 का उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सखारो मधिसूचना स० 5415-3-थम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पृष्ठ 12 पर्यन्त मधिसूचना स० 11496-जी-थम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उसके सुनिश्चित या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायान्तरण एवं चाट तान मास मे देने, हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है:-

क्या श्री जय राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित 'तथा' ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का दृश्यर है?